अंक - 6 मार्च - 2021

शिक्षा के गोठ

मासिक ई - न्यूज़ लेटर

स्कूल शिक्षा विभाग, छत्तीसगढ़ शासन

संपादकीय

सीखना सतत् चलने वाली प्रक्रिया है। इस सीखने में शिक्षा की महत्वपूर्ण भूमिका होती है, क्योंकि शिक्षा का मूल उद्देश्य व्यक्ति का सर्वांगीण विकास है। बच्चों के सर्वांगीण विकास में स्कूली शिक्षा का बहुत महत्वपूर्ण स्थान है। वर्तमान में नई शिक्षा नीति लागू किया जा रहा है। यह शिक्षा नीति समय अनुकूल व छात्र-हित पर आधारित है। शिक्षा नीति में परिवर्तन होने से मौजूदा शैक्षणिक पाठ्यक्रम संरचना में भी परिवर्तन स्वाभाविक ही है।

संक्रमण काल में छत्तीसगढ़ शासन, स्कूल शिक्षा विभाग की ओर से छात्र-छात्राओं के लिए अनेकानेक कार्यक्रम संचालित किए जा रहे हैं। इन कार्यक्रमों में शिक्षक व बच्चे स्वस्फूर्त होकर, रुचिपूर्वक नए-नए प्रयोगों व नवाचारों से नए-नए आयामों को छू रहे हैं। 'पढ़ई तुँहर दुआर', 'बुलटू के बोल', 'मोहल्ला क्लास', 'पढ़ई तुँहर पारा' जैसे कार्यक्रमों में दूरस्थ क्षेत्रों के शिक्षक व बच्चे उत्साह पूर्वक अध्ययन-अध्यापन कार्य कर रहे हैं।

शिक्षकों के द्वारा किए जाने वाले नए-नए प्रयोगों से बच्चे उत्साहित होकर पढ़ रहे हैं। cgschool.in के माध्यम से शिक्षक एक ही समय में अधिकाधिक बच्चों को अध्यापन करा पा रहे हैं, साथ ही बच्चों को भी अपने विद्यालय के शिक्षकों के साथ-साथ प्रदेश स्तर के शिक्षकों का आवश्यक मार्गदर्शन, परामर्श व शंका समाधान भी उपलब्ध हो पा रहा है। नवीन शिक्षण पद्धतियों के माध्यम से कठिन समय में जो उपलब्धियाँ हासिल हुई हैं, प्रशंसनीय हैं। इस कार्य को अंजाम तक पहुँचाने में जिन लोगों की महती भूमिका रही है, उनके प्रयासों की जितनी प्रशंसा की जाए कम है।

डी. राहुल वेंकट
संचालक
राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, छत्तीसगढ़

हर बच्चे को अच्छी शिक्षा उपलब्ध कराना शासन की प्राथमिकता : सीएम बघेल

अंग्रेजी स्कूलों के बेहतर संचालन, शिक्षा एवं प्रबंधन प्राचार्यों के जिम्मे

छत्तीसगढ़ के हर वर्गों के बच्चे के लिए अच्छी-से-अच्छी शिक्षा उपलब्ध कराना शासन की प्राथमिकता है। इसी दिशा में किए जा रहे प्रयासों के तहत स्वामी आत्मानंद अंग्रेजी माध्यम विद्यालय योजना शुरू की गई है। यह कोई साधारण योजना नहीं है, बल्कि भविष्य का छत्तीसगढ़ गढ़ने की मुहिम है। मुख्यमंत्री भूपेश बघेल आज शाम अपने निवास कार्यालय से वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से स्वामी आत्मानंद अंग्रेजी स्कूलों के प्राचार्यों के प्रशिक्षण सत्र को सम्बोधित कर रहे थे।

इस अवसर पर गृह मंत्री ताम्रध्वज साहू, कृषि मंत्री रविन्द्र चौबे, स्कूल शिक्षा मंत्री डॉ. प्रेमसाय सिंह टेकाम, मुख्यमंत्री के सलाहकार प्रदीप शर्मा, मुख्य सचिव अमिताभ जैन, अपर मुख्य सचिव सुब्रत साहू, प्रमुख सचिव स्कूल शिक्षा डॉ. आलोक शुक्ला, मुख्यमंत्री के सचिव सिद्धार्थ कोमल सिंह परदेशी, संचालक डी. राहुल वेंकट, डॉ. योगेश शिवहरे, डॉ. संजय गुहे सहित वरिष्ठ अधिकारी उपस्थित थे।

मुख्यमंत्री भूपेश बघेल ने आगे कहा कि अंग्रेजी स्कूलों के बेहतर संचालन, शिक्षा एवं प्रबंधन का दारोमदार प्राचार्यगणों एवं उनकी टीम के कंधों पर हैं। स्वामी जी ने छत्तीसगढ़ की भावी पीढ़ी के निर्माण के जो सपने देखे थे, उन सपनों को हम इन विद्यालयों के माध्यम से पूरा करेंगे। मुख्यमंत्री ने कहा कि राज्य में प्रथम चरण में 52 शासकीय विद्यालयों को इस योजना के तहत सर्वसुविधायुक्त अंग्रेजी स्कूलों के रूप में उन्नत किया गया है। इन सभी विद्यालयों में अत्याधुनिक ग्रंथालय, प्रयोगशाला, कम्प्यूटर एवं ऑनलाइन शिक्षा सुविधा उपलब्ध है।

इस अवसर पर स्कूल शिक्षा मंत्री डॉ. प्रेमसाय सिंह टेकाम ने कहा कि शिक्षा समाज का प्रतिबिम्ब है। उन्होंने उम्मीद जताई कि प्राचार्य एवं शिक्षकों की टीम अपने दायित्वों का भलीभाँति निर्वहन करेगी।

शिक्षा मंत्री ने अंग्रेजी में दिया उद्घाटन भाषण

अंग्रेजी माध्यम स्कूल के प्राचार्यों को गौरव की अनुभूति हुई

स्कूल शिक्षा मंत्री डॉ. प्रेमसाय सिंह टेकाम प्रशासन अकादमी निमोरा रायपुर में आयोजित स्वामी आत्मानंद अंग्रेजी माध्यम स्कूल के प्राचार्यों के 10 दिवसीय प्रशिक्षण का शुभारंभ किया। उन्होंने प्रशिक्षण में उपस्थित अंग्रेजी माध्यम स्कूलों के प्राचार्यों से कहा कि पढ़ाई में आधुनिक तकनीक के इस्तेमाल के साथ ही स्कूलों के संचालन में मेनेजमेंट के आधुनिक तरीकों का इस्तेमाल करना आना चाहिए। बच्चों को अंग्रेजी सिखाने के लिए यह आवश्यक है कि शिक्षक और बच्चे इंग्लिश में बात करें। सबसे महत्वपूर्ण बात जो प्राचार्यों को ध्यान में रखनी है वो यह है कि स्कूल में पढ़ने वाले सभी बच्चे अच्छे चरित्र और व्यवहार के साथ-साथ बोलने और पढ़ने में बेहतरीन प्रदर्शन कर सके। शिक्षा मंत्री डॉ. टेकाम हिंदी और अंग्रेजी में दिए उद्बोधन में मुख्य प्रशिक्षक की भाँति नजर आए।

मंत्री डॉ. टेकाम ने कहा कि राज्य में मुख्यमंत्री श्री भूपेश बघेल की मंशा के अनुसार 52 इंग्लिश स्कूलों का संचालन किया जा रहा है। इन स्कूलों को आकर्षक बनाने के लिए परम्परागत भवन के स्वरूप के बदले इन्हें नये स्वरूप में विकसित करने के उद्देश्य से आर्किटेक्ट की सेवाओं का उपयोग किया गया है। दस दिवसीय प्रशिक्षण में मुख्यतः लीडरशीप, स्कूल क्वालिटी, कार्यालयीन प्रक्रिया, विजन मिशन, शैक्षणिक कैलेण्डर, आपरेटिंग प्रक्रिया जैसे मुद्दों पर प्रशिक्षण दिया गया।

प्रमुख सचिव स्कूल शिक्षा डॉ. आलोक शुक्ला ने कहा कि सभी प्राचार्यों को नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति का अध्ययन करना है। बच्चों का आत्म विश्वास बढ़ाने और अंग्रेजी में बात करने के लिए नवाचारी गतिविधि की आदत डालनी होगी। दस दिन के प्रशिक्षण में डाक्यूमेंट तैयार करना और स्कूल कैलेण्डर बनाना है। उन्होंने कहा कि प्रदेश में प्रारंभ हुए अंग्रेजी माध्यम स्कूलों में हिंदी माध्यम के बच्चे भी पढ़ने आएंगे। ऐसे बच्चों को पूरा सहयोग मिलना चाहिए। बच्चों के यूनिट टेस्ट, मासिक, तिमाही, छमाही परीक्षा भी हो, जिससे बच्चे बोर्ड परीक्षा में बेहतर प्रदर्शन कर सके। शिक्षक स्वयं अपना मूल्यांकन करें। पढ़ाई के साथ-साथ अन्य शैक्षणिक गतिविधियां होनी चाहिए। बच्चों को अंग्रेजी सुनने और बोलने का अभ्यास कराना होगा।

राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद के संचालक श्री डी. राहुल वैंकट ने भी प्रशिक्षण कार्यक्रम को सम्बोधित किया। इस अवसर पर सुश्री मीताक्षरा, राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद के अतिरिक्त संचालक डॉ. योगेश शिवहरे, प्रशिक्षक प्रियंका त्रिपाठी, सौम्या रघुवीर, श्री सत्यराज अय्यर, डी. दर्शन, आई. संध्या रानी, ललित साहू सहित स्कूल शिक्षा विभाग के वरिष्ठ शिक्षा अधिकारी उपस्थित थे।

शिक्षकों एवं विद्यार्थियों को अब नियमित स्कूल जाना अनिवार्य होना चाहिए शिक्षकों एवं विद्यार्थियों का अभिमत

सर्वे का उद्देश्य:

कोविड लाकडाउन के बाद अब विभिन्न राज्य स्कूलों को खोल रहे हैं | कुछ हाई एवं हायर सेकन्डरी तो कुछ अन्य कक्षाओं में विभिन्न नियमों एवं प्रतिबंधों के साथ स्कूलों को अनलॉक कर रहे हैं | राज्य में अन्य सभी कार्यालय खुल गए हैं तो फिर शिक्षकों को ही क्यों स्कूल जाने से अभी तक रोका गया है?

ऐसे में शिक्षकों एवं विद्यार्थियों को स्कूल नियमित जाना शुरू करना चाहिए अथवा नहीं, इस पर विद्यार्थियों एवं शिक्षकों से अभिमत लेने का प्रयास किया गया | इस हेतु उनसे ये प्रश्न पूछकर हाँ अथवा नहीं में उत्तर देने को कहा गया-

विद्यार्थियों के लिए प्रश्न:

क्या अब आपके क्षेत्र में स्कूलों को नियमित प्रारंभ कर कक्षाओं में सीखना-सिखाना शुरू कर देना चाहिए ?
क्या आप स्कूल खुलने पर रोज स्कूल आएँगे ?

72% विद्यार्थी नियमित स्कूल जाना चाहते हैं

28% विद्यार्थी अभी भी स्कूल नहीं जाना चाहते

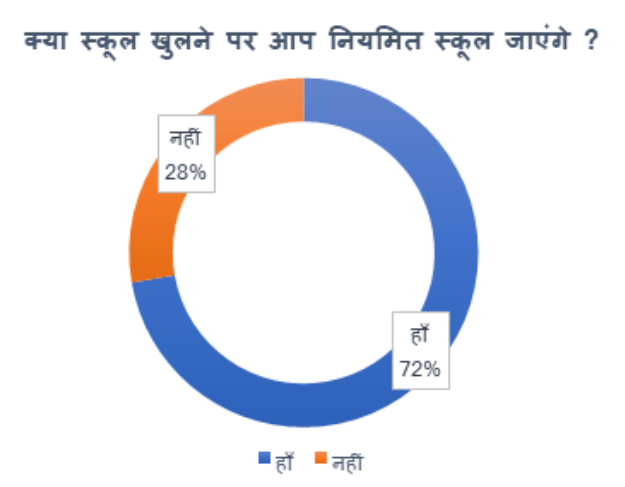

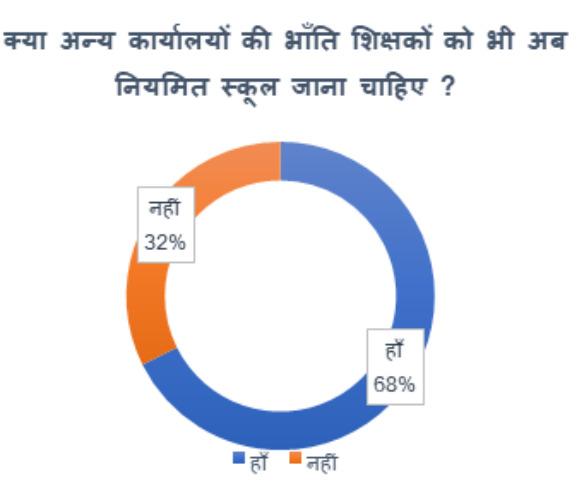

शिक्षकों के लिए प्रश्न:

क्या अन्य कार्यालयों की भाँति अब शिक्षकों को भी नियमित स्कूल आना शुरू कर देना अनिवार्य कर देना चाहिए?

68% शिक्षक अब नियमित स्कूल जाना चाहते हैं

32% शिक्षक अभी भी स्कूल नहीं जाना चाहते

परिणाम: जिन क्षेत्रों में कोरोना संक्रमण के केस नहीं हैं उन क्षेत्रों में शाला प्रबन्धन समिति को स्कूल खोलकर बच्चों को नियमित बुलाने के बारे में निर्णय लेने का अधिकार दे देना चाहिए | शिक्षकों को अब अन्य कार्यालयों की भाँति स्कूल में नियमित आना चाहिए |

18 मॉड्यूल पर राष्ट्रव्यापी प्रशिक्षण- निष्ठा की पहल

प्रदेश में अब तक 90 हजार शाला प्रमुख व शिक्षक प्रशिक्षित

स्कूल प्रमुखों एवं शिक्षकों की समग्र उन्नति के लिए राष्ट्रीय पहल का नाम है- 'निष्ठा'। निष्ठा योजना, स्कूल प्रमुखों और शिक्षकों के लिए राष्ट्रव्यापी प्रशिक्षण कार्यक्रम है, जिसका संचालन शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा किया जा रहा है। इस योजना का उद्देश्य शिक्षकों में व्यावसायिक दक्षताओं का विकास के साथ ही विद्यालय को सुरक्षित रखने की कला भी विकसित करना है।

इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए मंत्रालय, स्कूल शिक्षा एवं साक्षरता विभाग, भारत सरकार की गाईडलाइन के अनुसार कक्षा 1 से 8 तक के समस्त शिक्षकों एवं शाला प्रमुखों के लिए 18 मॉड्यूल्य NCERT द्वारा विकसित की गई है, जो कि विषयवस्तु एवं शिक्षण तकनीक पर आधारित है, निम्नांकित है-

निष्ठा आनलाइन प्रशिक्षण कार्यक्रम दीक्षा प्लेटफार्म पर समग्र शिक्षा एवं राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् द्वारा अनवरत किया जा रहा है। इस योजना के अंतर्गत छत्तीसगढ़ राज्य के 1,35,199 शिक्षकों एवं शाला प्रमुखों को प्रशिक्षित करने का लक्ष्य है, जिसमें अब तक 90,000 शिक्षकों एवं शाला प्रमुखों ने प्रशिक्षण प्राप्त कर लिया है।

निष्ठा आनलाइन प्रशिक्षण के अंतर्गत शिक्षकों का आनलाइन पंजीयन दीक्षा पोर्टल पर 2 नवम्बर 2020 से प्रारंभ किया गया, जिसे 31 जनवरी 2021 तक पूर्ण किया जाना सुनिश्चित् किया गया था, परंतु किसी अपरिहार्य कारणों से लक्षित शेष जिनका पंजीयन पंजीबद्ध न हो सका या पंजीयन के बावजूद प्रशिक्षण अवधि में आनलाइन उपस्थित होने में असमर्थ रहे, ऐसे प्रतिभागियों के लिए एक अंतिम अवसर भी दिया जाकर लक्ष्य को प्राप्त करने का एक सुसंगत प्रयास किया जा रहा है।

CG-1	पाठ्यक्रम एवं समावेशी शिक्षा	CG-7	विद्यालय आधारित आकलन	CG-13	विद्यालय नेतृत्व–संकल्पना और अनुप्रयोग
CG-2	विद्यालय में स्वास्थ्य एवं कल्याण	CG-8	पर्यावरण अध्ययन का शिक्षाशास्त्र	CG-14	विद्यालयी शिक्षा में नयी पहले
CG-3	स्वस्थ विद्यालयी परिवेश निर्मित करने के लिए व्यक्तिगत सामाजिक योग्यता विकसित करना	CG-9	गणित का शिक्षाशास्त्र	CG-15	पूर्व–माध्यमिक शिक्षा
CG-4	शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में जेंडर आयामों की प्रासंगिकता	CG-10	सामाजिक विज्ञान का शिक्षणशास्त्र	CG-16	मापदंड पूर्व व्यावसायिक शिक्षा
CG-5	शिक्षण अधिगम और मूल्यांकन में आई.सी.टी.	CG-11	भाषा शिक्षण शास्त्र	CG-17	कोविड–19 परिदृश्यःविद्यालयी शिक्षा में चुनौतियों का समाधान
CG-6	कला समेकित शिक्षा	CG-12	विज्ञान का शिक्षाशास्त्र	CG-18	अधिकारों की समझ, यौन शोषण और पॉक्सो अधिनियम 2012

प्रतिभागियों के लिए 15 दिवस में तीन (03) माड्यूल तथा सभी 18 माड्यूल को पूर्ण करने के लिए तीन महीने का समय निर्धारित किया गया है। इस प्रशिक्षण में संबंधित शिक्षकों/शाला प्रमुखों को प्रत्येक माड्यूल को पूर्ण करने पर एक प्रमाण पत्र तथा 18 माड्यूल्स पूर्ण करने के पश्चात् Competency Based Test के सफलतापूर्वक पूर्ण करने के उपरांत पूर्णता का प्रमाण पत्र दीक्षा पोर्टल के माध्यम से जारी किया जाएगा। प्रशिक्षण प्राप्त जिज्ञासु शिक्षकों एवं शाला प्रमुखों को भविष्य में यदि इस माड्यूल की आवश्यकता पड़ती है, तो परिषद् को अवगत कराने पर इन माड्यूल को पुनः देख पाने व पढ़ पाने की सुविधा परिषद् द्वारा उपलब्ध करा दी जाएगी।

'पढ़ई तुंहर दुआर' को मिला ई-गवर्नेंस अवार्ड

मुख्यमंत्री और स्कूल शिक्षा मंत्री ने दी बधाई

कोरोना संक्रमण और लॉकडाउन के चलते स्कूली बच्चों को घर बैठे ऑनलाइन शिक्षण सुविधा मुहैया कराने के उद्देश्य से छत्तीसगढ़ सरकार द्वारा संचालित 'पढ़ई तुंहर दुआर' कार्यक्रम को न सिर्फ राष्ट्रीय स्तर पर सराहा गया बल्कि इस अभिनव कार्यक्रम को राष्ट्रीय स्तर पर ई-गवर्नेंस अवार्ड भी मिला है। यह अवार्ड उत्तरप्रदेश की राजधानी लखनऊ में उत्तरप्रदेश के मुख्यमंत्री श्री योगी आदित्यनाथ की उपस्थिति में उत्तर प्रदेश के राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार) स्टाम्प तथा न्यायालय शुल्क, पंजीयन श्री रविन्द्र जायसवाल के हाथों प्रदान किया गया। छत्तीसगढ़ राज्य की ओर से संचालक लोक शिक्षण एवं प्रबंध संचालक समग्र शिक्षा श्री जितेन्द्र शुक्ला, सहायक संचालक समग्र शिक्षा डॉ. एम. सुधीश और एन.आई.सी. की वैज्ञानिक श्रीमती ललिता वर्मा ने यह पुरस्कार ग्रहण किया। छत्तीसगढ शासन स्कूल शिक्षा विभाग की इस महत्वपूर्ण उपलब्धि पर मुख्यमंत्री श्री भूपेश बघेल और स्कूल शिक्षा मंत्री डॉ. प्रेमसाय सिंह टेकाम ने विभाग के प्रमुख सचिव डॉ. आलोक शुक्ला और पूरी टीम को बधाई दी है। मुख्यमंत्री श्री बघेल ने इस पुरस्कार को छत्तीसगढ़ के सभी सक्रिय शिक्षकों को समर्पित किया है।

इस कार्य्रकम को स्कूल शिक्षा विभाग के प्रमुख सचिव डॉ. आलोक शुक्ला ने कोविड लॉकडाउन के दौरान कार्यालयों के बंद होने की स्थिति में अपने निवास पर एन.आई.सी. और विभाग की टीम के साथ बहुत ही कम लागत में बिना किसी बाहरी एजेंसी की सहायता लिए पूरी तरह विभागीय संसाधनों से तैयार किया।

'पढ़ई तुंहर दुआर' की वेबसाईट में बहुत ही कम समय में शिक्षकों एवं बच्चों को जोड़ा गया। वर्तमान में वेबसाईट में 25.97 लाख विद्यार्थी एवं 2.07 लाख शिक्षक जुड़े हुए हैं।

'पढ़ई तुंहर दुआर' की वेबसाईट में कक्षावार एवं विषयवार बहुत सारी सीखने में सहायक सामग्री अपलोड की गयी है। कोरोना के दौरान शिक्षकों ने तकनीक को बहुत जल्दी सीख लिया। नियमित ऑनलाइन कक्षाओं का संचालन, गृहकार्य देना, गृहकार्यों की जाँच कर बच्चों को फीडबैक देना, बच्चों को शंकाओं को पूछने और उनके समाधान प्राप्त करने के अवसर, प्रत्येक बच्चे का आकलन कर उसका रिकार्ड रख पाना, सभी पाठ्यपुस्तकों के पीडीएफ डाउनलोड करने जैसी बहुत सी सुविधाएँ इस वेबसाईट में दी गई हैं।

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस फॉर यूथ कार्यक्रम के लिए राज्य के 9 छात्रों का चयन

स्कूल शिक्षा मंत्री डॉ. टेकाम ने छात्रों और शिक्षकों को किया सम्मानित

स्कूल शिक्षा मंत्री डॉ. प्रेमसाय सिंह टेकाम ने आज महासमुंद जिले के विकासखण्ड पिथौरा के ग्राम सुहागपुर में आयोजित कार्यक्रम में आर्टिफिसियल इंटेलिजेंस की राष्ट्रीय प्रतियोगिता के फेस-2 में चयनित राज्य के 9 छात्रों और उनके शिक्षकों को सम्मानित किया। कार्यक्रम में राष्ट्रीय स्तर पर चयनित सभी छात्रों को लैपटाप और प्रमाण-पत्र का वितरण किया गया। देश के आकांक्षी जिलों में से कुल चयनित 14 छात्रों में से 7 छात्र राज्य के आकांक्षी जिला महासमुंद के विकासखण्ड बागबाहरा के शासकीय कुलदीप निगम उच्चतर माध्यमिक विद्यालय नर्रा के हैं। फेस-2 के लिए चयनित छात्रों ने कृषि, ग्रामीण अर्थव्यवस्था, ग्रामीण स्वास्थ्य से संबंधित समस्याओं के आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस की सहायता से समाधान हेतु इंटेल के साथ मिलकर कार्य करेंगे। कार्यक्रम में संसदीय सचिव श्री द्वारिकाधीश यादव, स्थानीय जनप्रतिनिधि सहित संबंधित स्कूलों के विद्यार्थी और शिक्षक भी उपस्थित थे।

मंत्री डॉ. टेकाम ने कार्यक्रम में सम्मानित सभी छात्रों और शिक्षकों को बधाई देते हुए उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना की।

केन्द्र सरकार की इलेक्ट्रानिक्स एवं सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय और प्रसिद्ध साफ्टवेयर कंपनी इंटेल के सहयोग से आयोजित आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) फॉर यूथ कार्यक्रम में देश के सरकारी स्कूलों में कक्षा 6वीं से 12वीं मे अध्ययनरत छात्रों को नवीनतम आर्टिफिसियल तकनीक से रूबरू कराने और उनके द्वारा समाज की समस्याओं का एआई के उपयोग से समाधान ढूँढने के लिए यह कार्यक्रम चलाया गया।

12 जनवरी 2021 को फेस-2 में चयनित देश के टॉप 100 छात्रों की सूची जारी की गई। इसमें छत्तीसगढ़ राज्य से 9 छात्र चयनित हुए जिसमें 7 छात्रों महासमुंद के नर्रा जिले से हैं। फेस-2 के लिए चयनित 9 छात्रों में महासमुंद जिले के स्कूल शासकीय कुलदीप निगम उच्चतर माध्यमिक विद्यालय नर्रा, विकासखंड-बागबाहरा के छात्रों में वैभव देवांगन, धीरज यादव, घनश्याम निषाद, यमुना यादव, हिमांशी देवांगन, परमेश्वरी यादव और गोपिका देवांगन और इसके अलावा शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय लेंजवारा जिला बेमेतरा की छात्रा अंजलि निर्मलकर और शासकीय गर्ल्स हायर सेकेंडरी स्कूल रायपुर की छात्रा अंकिता नामदेव शामिल है।

द्वितीय चरण के लिए इन सभी छात्रों को इंटेल के इंजीनियर प्रशिक्षण देंगे उनकी कार्यशाला आयोजित की जाएगी। जिनमें चयनित छात्रों के आइडिया को वर्किंग प्रोटोटाइप में ढाला जाएगा और इनमें से टॉप 30 का चयन फेस-3 में किया जाएगा।

प्रोफेशनल लर्निंग कम्यूनिटी से गुणवत्तापूर्ण शिक्षा में मिलेगा सहयोग : डॉ. आलोक शुक्ला

स्कूल शिक्षा विभाग के प्रमुख सचिव डॉ. आलोक शुक्ला ने रायपुर जिले के सक्रिय विज्ञान के प्रोफेशनल लर्निंग कम्यूनिटी (पीएलसी) की बैठक ली। उन्होंने कहा कि पीएलसी के माध्यम से राज्य में गुणवत्तापूर्ण शिक्षा में सहयोग मिलेगा। उन्होंने कहा कि हर शिक्षक में कुछ न कुछ मजबूत पक्ष होता है। ऐसे ही सभी शिक्षक अपने मजबूत पक्ष को एक दूसरे से साझा करेंगें तो पीएलसी को संबल मिलेगा। उन्होंने सुझाव दिया कि एक ऐसा प्लेटफार्म तैयार करे जिसमें शिक्षक आपस में मिलजुल कर अपने आईडिया साझा कर सके। उन्होंने कहा कि एक अच्छे शिक्षक को न केवल विज्ञान का ज्ञान होना चाहिए बल्कि उस ज्ञान को बच्चों तक कैसे पहुँचाया जाएं इसकी भी जानकारी होना चाहिए।

प्रमुख सचिव स्कूल शिक्षा ने बताया कि विज्ञान की कठिन अवधारणाओं को किस प्रकार से प्राचीन व्याख्यान या लेक्चर विधि से हटकर नये तरीके से कैसे सिखाया जा सकता है इस बारे में शिक्षकों से चर्चा की।

डॉ. आलोक शुक्ला ने माध्यमिक शिक्षा मण्डल को ग्रीष्म अवकाश के दौरान व्याख्याताओं को विषयवार प्रशिक्षण के लिए प्रोफेशनल लर्निंग कम्यूनिटी की जिम्मेदारी देने और उनके माध्यम से शिक्षकों के लिए रोचक प्रशिक्षण संदर्शिका बनाने के निर्देश दिए।

जिला शिक्षा अधिकारी श्री ए.एन. बंजारा ने कहा कि पीएलसी समूह को लगातार मोटिवेट करें। सीनियर अपने अनुभव को साझा करेंगे तो दूसरे बहुत से शिक्षकों को प्रेरणा मिलेगी। समग्र शिक्षा के सहायक संचालक डॉ. एम.सुधीश ने बताया कि राज्य में प्रारंभिक स्तर पर विभिन्न विषयों और मुद्दों पर बहुत सी पीएलसी का गठन किया गया है, जिसमें शिक्षकों को एकेडमिक और क्वालिटी कार्यों के लिए सक्रिय रखा गया है। स्कूल शिक्षा विभाग पीएलसी की अवधारणा को हाईस्कूल, हायर सेकण्डरी स्तर तक ले जाना चाहता है। इस संबंध में कुछ दिन पूर्व राज्य में गणित विषय की पीएलसी का गठन किया गया। माध्यमिक शिक्षा मण्डल में विज्ञान विषय के पीएलसी के साथ चर्चा में लगभग 75 व्याख्याता स्वेच्छा से शामिल हुए। बैठक में छत्तीसगढ़ माध्यमिक शिक्षा मंडल के सचिव प्रो.व्ही. एन. गोयल, समग्र शिक्षा के ए.पी.सी. आशीष गौतम, शिक्षा सलाहकार सत्यराज अय्यर, समन्वयक श्री पटेल के साथ-साथ राज्य परियोजना कार्यालय के अधिकारी भी उपस्थित थे।

'इतना तो मेरे बच्चे कर ही सकते हैं' पर राज्य स्तरीय वेबीनार

पारा कक्षा मोबाइल मॉनिटरिंग अब पोर्टल पर

छत्तीसगढ़ में संचालित 'पढ़ई तुहंर दुआर' कार्यक्रम के अंतर्गत ब्लॉक स्तर से जिला स्तर तक सुगम तरीके से पारा कक्षाओं का निरीक्षण के लिए मोबाइल मॉनिटरिंग की भी सहूलियत अब इस कार्यक्रम के पोर्टल सीजीस्कूल पर उपलब्ध रहेगी। यह जानकारी छत्तीसगढ़ राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद (एस.सी.ई.आर.टी) के अतिरिक्त संचालक डॉ. योगेश शिवहरे ने एस.सी.ई.आर.टी में आयोजित राज्य स्तरीय वेबीनार में दी। उन्होंने कहा कि विद्यार्थियों का एक निष्पक्ष और पारदर्शी मूल्यांकन करना अतिआवश्यक हैं और विद्यालयों के प्राचार्यों एवं संकुल समन्वयकों की इसमें अहम भूमिका हैं।

छत्तीसगढ़ राज्य शिक्षण अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद के अतिरिक्त संचालक डॉ. योगेश शिवहरे ने 'इतना तो मेरे बच्चे कर ही सकते हैं।' अभियान के बारे में अकादमिक और प्रशासनिक विषयों की जानकारी देते हुए कहा की संकुल समन्वयकों की भूमिका इस अभियान में अत्यंत महत्वपूर्ण रहेगी। हर माह निरंतर रूप से मोहल्ला कक्षाओं का निरीक्षण कर सभी शिक्षकों को आंकलन के प्रति प्रोत्साहन प्रदान करें।

प्रदेश में संचालित पारा और मोहल्ला कक्षाओं को सुव्यवस्थित करने और स्कूल सीजीस्कूलडॉटइन पर मासिक निरीक्षण के बारे में जागरूकता पैदा करने की दृष्टि से यह वेबीनार आयोजित किया गया। वेबीनार में 9 हजार प्रतिभागियों ने लाईव वेबीनार में शामिल हुए। जिसमें संकुल अकादमिक समन्वयक, विकासखंड शिक्षा अधिकारी, संकुल समन्वयक, सहायक विकासखंड शिक्षा अधिकारी, डीएमसी, एडीपीओ, डाईट के प्राचार्य शामिल हुए। लगभग 2.5 घंटे चली इस वेबिनार में, सहा. प्राध्यापक ए.के. सारस्वत व शिक्षा सलाहकार सत्यराज अय्यर, पाँचों संभागों के सीएसी श्री मुकेश, श्री देवेंद्र सिंह ठाकुर, श्री राजकमल, श्री तुलसीराम एवं श्री लक्ष्मीकान्त ने पैनलिस्ट के रूप में शामिल होकर अपने अनुभवों को राज्य स्तर पर साझा किया।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति पर राज्य स्तरीय वेबीनार

राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् की पहल

स्कूल शिक्षा विभाग छत्तीसगढ़ के राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् द्वारा छत्तीसगढ़ राज्य के समस्त शिक्षकों के लिए राज्य स्तरीय वेबीनार का आयोजन किया गया है, इस वेबीनार में विषय विशेषज्ञ सहित शासकीय शिक्षक शिक्षा महाविद्यालय के सहायक प्राध्यापक आलोक शर्मा एवं समग्र शिक्षा के सहा. संचालक डॉ. एम. सुधीश उपस्थित थे। लगभग 15000 से भी अधिक शिक्षकों ने वेबीनार में जुड़कर सहभागिता ली। इस अवसर पर श्री शर्मा ने कहा कि प्रदेश के समस्त शिक्षकों को राष्ट्रीय शिक्षा नीति के उद्देश्यों व नीति पर की गई अनुशंसा की जानकारी होना अति आवश्यक है।

वेबीनार में राज्य योजना आयोग के सलाहकार डॉ. मिताक्षरा कुमारी ने राष्ट्रीय शिक्षा नीति की भूमिका, एस.सी.ई.आर.टी. के सुशील राठोड़ ने प्रारंभिक बाल्यावस्था एवं देखरेख शिक्षा, एस.सी.ई.आर.टी. के विद्या डांगे ने विद्यार्थियों के विकास के लिए आकलन, एस.सी.ई.आर.टी. के डॉ. बी. रघुकुमार ने बहुभाषावाद् तथा समग्र शिक्षा के डॉ. एम.सुधीश ने शिक्षकों का सतत् व्यावसायिक विकास और एन.सी.ई.आर.टी. के डॉ. अमरेन्द्र बेहरा ने प्रौद्योगिकी का उपयोग और एकीकरण विषय पर विस्तृत एवं रोचक ढंग से अपनी बात रखी।

पढ़ना-लिखना अभियान

स्वयंसेवी शिक्षकों का राज्यस्तरीय उन्मुखीकरण

पढ़ना-लिखना अभियान अंतर्गत स्वयंसेवी शिक्षकों का दो दिवसीय ऑनलाईन उन्मुखीकरण आयोजित किया गया। साक्षरता कक्षा में असाक्षरों को स्वयंसेवी शिक्षक पढ़ाएंगे। उन्मुखीकरण कार्यक्रम में यू-ट्यूब लाइव के माध्यम से अभियान का परिचय देते हुए सहायक संचालक श्री प्रशांत पाण्डेय ने स्वयंसेवक शिक्षकों की भूमिका और कार्यों पर समझ विकसित की।

प्रदेश स्तर पर उन्मुखीकरण कार्यक्रम को दस हजार से अधिक लोगों ने देखा।

वरिष्ठ शिक्षा सलाहकार सत्यराज अय्यर ने इस अभियान के लिए डिजिटल माध्यम के उपयोग को स्पष्ट किया।

राज्य साक्षरता मिशन प्राधिकरण के सहायक संचालक एवं नोडल अधिकारी प्रशांत कुमार पाण्डेय ने शिक्षित परिवार, शिक्षित समाज, शिक्षित देश बनाने के लिए अमूल्य योगदान देने का आह्वान स्वयंसेवी शिक्षकों से की। सहायक संचालक दिनेश कुमार टांक ने स्वयंसेवी शिक्षकों को प्रेरित करते हुए कहा कि इस अभियान के साक्षरता यज्ञ में जो चाहें पूर्णाहुति दे सकता है। उन्होंने छत्तीसगढ़ी में प्रेरणा गीत प्रस्तुत किया।

उन्मुखीकरण के प्रथम दिवस रिसोर्स पर्सन सेन्ट्रल कालेज ऑफ़ एजुकेशन की प्रो. धारा यादव ने कक्षा संचालन, चुन्नीलाल शर्मा ने स्वयंसेवी शिक्षकों की भूमिका, परियोजना सलाहकार श्रीमती निधि अग्रवाल

ने साक्षरता कक्षा व वातावरण निर्माण, सुनील रॉय ने गूगल पंजीयन व नेहा शुक्ल ने पोर्टल, एप एवं यूट्युब माध्यमों के उपयोग पर सत्र लिया।

स्टेट सेंटर फॉर लिटरेसी की सदस्य डॉ. मंजीत कौर बल ने बच्चे और प्रौढ़ के सीखने का तरीके को स्पष्ट किया।

चूंकि वे स्कूल नहीं जाते इस कारण पढ़ाई से उनका आत्मविश्वास कम हो जाता है। प्रौढ़ों के पास पहले से ही ज्ञान का भंडार है। हमें उनके ही ज्ञान और अनुभव को जानते हुए साक्षरता के विषयवस्तु को भलीभाँति स्पष्ट करना हैं। साक्षरता कक्षा को रोचक बनाने के लिए समूह कार्य, ज्ञानवर्द्धक फिल्म, चर्चा, केसस्टडी (कहानी), खेल, अभ्यास को शामिल किया जाए। बताया कि डिजिटल व टेक्नोलॉजी के युग में कार्य कर रहे हैं। कोविड-19 ने मोबाईल से दोस्ती करा दी है।

इंडिया एजुकेशन कलेक्टिव

मार्च 2020 से फरवरी 2021 तक COVID-19 के दौरान किए गए मुख्य प्रयास

इंडिया एजुकेशन कलेक्टिव छत्तीसगढ़ राज्य के 2 जिलों बस्तर और महासमुंद के क्रमशः 22 संकुल एवं 3 संकुल के कुल 296 प्राथमिक शालाओं में कार्यरत है। मार्च 2020 तक की स्थिति अनुसार राज्य के 596 शिक्षक एवं 23097 विद्यार्थी इंडिया एजुकेशन कलेक्टिव द्वारा संचालित QLI प्रक्रिया से जुड़े रहे। छत्तीसगढ़ राज्य में COVID-19 महामारी के दौरान बच्चों के सीखने के अनुकूलन हेतु एवं COVID-19 के संक्रमण की रोकथाम एवं जागरूकता हेतु IEC द्वारा निम्न प्रयास किए गए-

• 98 ग्राम पंचायतों में समन्वयन बैठकों का आयोजन - राज्य में COVID-19 के दौरान 25 संकुलों की 98 ग्राम पंचायतों के सरपंच एवं 202 SMC मेंबर्स तथा 58 आंगनबाड़ी कार्यकर्ताओं के साथ बैठक आयोजित की गई। इनका उद्देश्य ग्राम पंचायत स्तर पर आवश्यक समन्वय बनाना और स्थानीय स्वयंसेवियों की पहचान और समर्थन करना रहा। इसके साथ ही स्कूल बंद होने की स्थिति में बच्चों की पढ़ाई कैसे जारी रखें, COVID-19 के संक्रमण की रोकथाम एवं ग्रामीण क्षेत्रों में जागरूकता, मोहल्ला क्लास का अवलोकन एवं वॉलंटियर्स को सहयोग प्रदान करना भी प्रमुख उद्देश्य रहे। स्कूल बंद होने की स्थिति में ग्राम पंचायतों की मीटिंग का आयोजन एक बहुत अच्छा प्रयास रहा, तथा निश्चित रूप से शिक्षा के प्रति समुदाय की भागीदारी में बढ़ोतरी हुई है। बस्तर जिले में 15 सरपंच द्वारा वालंटियर्स केंद्र की व्यवस्था की गई।

• वॉलिंटियर्स मीटिंग - 25 संकुल में वॉलिंटियर्स मीटिंग का आयोजन किया गया, जिसमें बस्तर जिले के 1053 वॉलिंटियर्स (यूनिसेफ द्वारा संचालित सीख कार्यक्रम के अंतर्गत शिक्षा विभाग द्वारा चिह्नाकित) तथा महासमुंद जिले के 53 वॉलिंटियर्स (IEC सदस्यों द्वारा ग्राम पंचायत एवं SMC मेंबर्स के सहयोग से चिह्नाकित) सहभागिता की गई। IEC द्वारा प्रत्येक सप्ताह गूगल मीट पर वर्चुअल सत्र संपादित किया गया, जिसमें 981 वालंटियर द्वारा सहभागिता की गई।

• वर्चुअल टीचर कलेक्टिव मीटिंग - 25 संकुल में ऑनलाइन वर्चुअल टीचर कलेक्टिव मीटिंग आयोजित किया गया, जिसमें 576 शिक्षकों एवं 25 संकुल के संकुल समन्वयक ने सहभागिता की। 576 शिक्षकों को क्षमता आधारित वर्कशीट व्हाट्सएप के माध्यम से साझा किया गया। पाठ्यक्रम के अनुसार, मौसम, जंगल, त्यौहार, परिवार, फसल, अवधारणा की पहचान कर बच्चों में अवलोकन करना, अंतर करना, तुलना, वर्गीकरण, विश्लेषण, संख्या पहचान, अनुमान लगाना आदि विभिन्न मुख्य दक्षताओं को विकसित होने का अवसर सृजित किया गया और अन्य शिक्षकों के साथ साझा भी किया गया ।

लर्निंग नेवीगेटर – छत्तीसगढ़ राज्य की राष्ट्रीय पहल

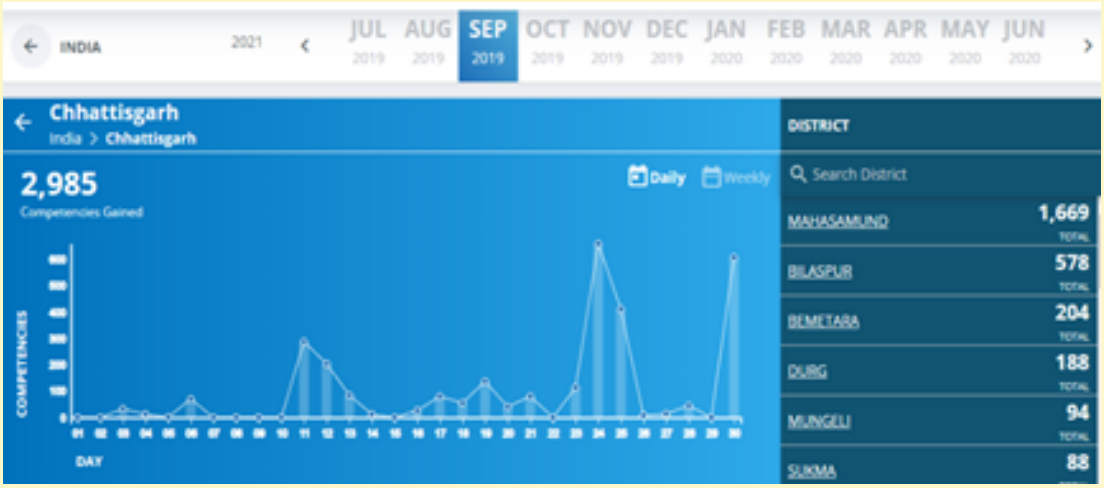

स्कूल शिक्षा विभाग की प्रेरणा से, राजीव गाँधी शिक्षा मिशन के नेतृत्व में इंडिया एजूकेशन कलेक्टिव और gooru.org के साथ मिलकर राज्य के शिक्षकों ने इस दिशा में उल्लेखनीय प्रयास किये हैं। तकनीकी को दक्षता विकास के उपकरण के रूप में तैयार करने का अपने आप में यह अनूठा प्रयास है । राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में अपेक्षित दक्षता विकास के महत्व को पहले से ही अपने मुख्य प्रयास में रखते हुए अक्टूबर 2018 में शिक्षकों ने राज्य परियोजना कार्यालय की देखरेख में लर्निंग आउटकम को दक्षता से सुमेलित करते हुए एक व्यवस्थित दक्षता फ्रेमवर्क, प्राथमिक स्तर के गणित विषय के लिये तैयार किया । इस फ्रेमवर्क में प्रत्येक दक्षता को और छोटे अंशों में व्यवस्थित करते हुए उनके लिए सीख संसाधन और मूल्यांकन के सेट तैयार किये गए । यह सारी सामग्री, लर्निंग नेवीगेटर प्लेटफार्म पर राज्य के शिक्षकों के लिए उपलब्ध कराई गई और अगस्त 2019 से राज्य के 160 शिक्षक इससे अभ्यास कर रहे हैं । गणित विषय और प्राथमिक कक्षाओं के साथ शुरुआत कर अब भाषा पर और उच्च प्राथमिक स्तर के लिए भी दक्षता फ्रेमवर्क और सीख समग्री तथा मूल्यांकन सेट की तैयारी प्रगति पर है । इस कार्यक्रम के मुख्य भाग निम्नलिखित हैं–

• लर्निंग आउटकम को दक्षता के रूप में नियोजित कर, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की अपेक्षा अनुसार 2 वर्ष पूर्व ही राज्य ने अभ्यास प्रारम्भ किए ।

• विश्व स्तरीय लर्निंग प्लेटफार्म राज्य के शिक्षकों और बच्चों के लिए उपलब्ध हुआ ।

• विविध दक्षताओं के विकास हेतु विविध प्रकार के सीख संसाधन और मूल्यांकन सेट प्रत्येक शिक्षक अपने मोबाइल से ही इस्तेमाल कर सकते हैं और उसे समृद्ध कर सकते हैं ।

• राज्य के 160 शिक्षकों द्वारा इसे उपयोग किया जा रहा है।

• एक अध्ययन के दौरान 80% से अधिक शिक्षकों ने इसे बच्चों को सीखने और शिक्षक को सहयोग करने के लिये अत्यंत उपयोगी माना है ।

• सीख को दक्षता केन्द्रित बनाने और उसका सतत आँकलन करने के लिये तकनीकी के प्रभावी इस्तेमाल का यह अनूठा उदाहरण है ।

• राज्य स्तर पर बच्चों की सीख और शिक्षक की आवश्यकताओं को विविध प्रारूपों और भिन्न स्तरों पर देखा जा सकता है, जो सहयोगी योजनाओं हेतु आवश्यक है ।

• लर्निंग नेवीगेटर गणित विषय के शिक्षक न होने पर भी शिक्षकों को गणित शिक्षण के लिए सशक्त बनाने क उपयोगी टूल बनकर सामने आया है ।

• विद्यालय संचालन न होने पर भी शिक्षकों ने इसमें उपलब्ध सीख संसाधनों का उपयोग किया और अपनी ऑनलाइन कक्षाओं और मोहल्ला कक्षाओं में शामिल किया ।

• परीक्षा का आयोजन न हो पाने की स्थिति में भी सतत आँकलन के रूप में 2000 से अधिक बच्चों के दक्षता अर्जित करने के साक्ष्य प्लेटफार्म पर उपलब्ध हैं ।

वर्तमान में भाषा का दक्षता फ्रेमवर्क और उच्च प्राथमिक स्तर की कक्षाओं के फ्रेमवर्क प्लेटफार्म हेतु तैयार होने के अन्तिम चरण में हैं और शीघ्र ही शिक्षकों को उपलब्ध होंगे। छात्रों के लिए ऑफलाइन एप्प तैयार हो चुका है और अभ्यास हेतु योजना का भाग है । शिक्षकों के लिए ऑफलाइन एप्प शीघ्र ही तैयार होगा और राज्य के शिक्षक उसका प्रभावी उपयोग कर सकेंगे।

राष्ट्रीय स्तर का डिजिटल ओलम्पियाड

छत्तीसगढ़ से 10 बच्चे प्रावीण्य सूची में

स्कूल शिक्षा मंत्री डॉ. प्रेमसाय सिंह टेकाम ने कहा है कि डिजिटल ओलम्पियाड विद्यार्थियों में प्रतिस्पर्धा की भावना विकसित करने का उत्तम माध्यम है। इसमें भाग लेकर विद्यार्थी न केवल अपनी क्षमता का विकास करते हैं, बल्कि राष्ट्रीय स्तर पर अपनी तैयारी के स्तर का भी आँकलन कर पाते हैं। डॉ. टेकाम ने इस आशय के विचार आज नवीन विश्राम गृह रायपुर में आयोजित लोक सेवा केन्द्र (सीएससी) ओलम्पियाड पुरस्कार वितरण समारोह में व्यक्त किए। उन्होंने राष्ट्रीय स्तर पर कक्षा तीसरी से 12वीं तक के विद्यार्थियों के लिए विविध विषयों पर आयोजित ओलम्पियाड की प्रावीण्य सूची में शामिल छत्तीसगढ़ के 10 प्रतिभाशाली बच्चों को पुरस्कार प्रदान किए। यह ओलम्पियाड इलेक्ट्रॉनिक्स एवं सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय भारत सरकार द्वारा हिंदी, अंग्रेजी, गणित, विज्ञान, भौतिकी, रसायन आदि विषयों पर कोरोनाकाल में 12 अक्टूबर से 4 नवम्बर तक आयोजित किया गया था। डिजिटल ओलम्पियाड में छत्तीसगढ़ से 11 हजार बच्चों ने अपनी सहभागिता दर्ज की। मंत्री डॉ. टेकाम ने पुरस्कार वितरण समारोह में डिजिटल ओलम्पियाड में सहभागिता निभाने वाले विद्यालयों के प्राचार्यों, शिक्षकों को भी प्रतीक चिह्न प्रदान कर सम्मानित किया।

स्कूल शिक्षा मंत्री डॉ. टेकाम ने पुरस्कृत बच्चों को बधाई और शुभकामनाएं देते हुए कहा कि कोरोनाकाल में बच्चों की पढ़ाई के प्रति रूझान बनाए रखने के साथ ही उनमें स्वस्थ प्रतिस्पर्धा का विकास करने के लिए लोक सेवा केन्द्र (सीएससी) द्वारा ऑनालाईन डिजिटल ओलम्पियाड का आयोजन किया गया, जो एक सराहनीय प्रयास है।

डॉ. टेकाम ने कहा कि पिछले वर्ष लोक सेवा केन्द्र के द्वारा कक्षा तीसरी से 12वीं तक के विद्यार्थियों के लिए आयोजित विभिन्न विषयों की डिजिटल ओलम्पियाड में पूरे देश से 2 लाख 4 हजार बच्चों ने भाग लिया। छत्तीसगढ़ से 11 हजार बच्चों ने अपनी सहभागिता दर्ज की, जो सराहनीय है। उन्होंने कहा कि गत वर्ष की सफलता को देखते हुए इस वर्ष भी ओलम्पियाड का आयोजन किया जा रहा है।

इस अवसर पर लोक सेवा केन्द्र-ई-गर्वनेंस सर्विस इंडिया लिमिटेड के राज्य प्रमुख श्री मदन मोहन राउत ने बताया कि राष्ट्रीय स्तर की इस डिजिटल ओलम्पियाड प्रतियोगिता के लिए पंजीयन कोरोनाकाल में एक अप्रैल से प्रारंभ हुआ।

सुकमा

सफलता की कहानी

सोड़ी भीमे को एक ही पाँव से नृत्य करते देख आश्चर्यचकित रह जाते हैं लोग

ब्लॉग लेखक :- गौतम कुमार शर्मा, सूरजपुर

सोड़ी भीमे अस्थिबाधित दिव्यांग छात्रा है, जो आकार आवासीय संस्था कुम्हाररस, सुकमा में कक्षा 5 वीं में अध्ययनरत है| सोड़ी भीमे अतिसंवेदनशील नक्सल प्रभावित क्षेत्र के पहाड़ी ढलानों पर स्थित अत्यंत पिछड़े दूरस्थ वनांचल गाँव केशापारा गुफड़ी में निवास करती है| इनके गाँव में मूलभूत सुविधाओं की काफी कमी है| यहाँ तक की गाँव में सड़क की सुविधा तक उपलब्ध नहीं है|

सोड़ी के पिता ने बताया कि सोड़ी जब 3 साल की थी, तो ठंड के मौसम में घर के आँगन में आग तापने के दौरान खेलते-खेलते वो अचानक गिर पड़ी और उसका दाहिना पैर बुरी तरह से उस आग में झुलस गया और वह असहनीय दर्द से जोर-जोर से चिखने - चिल्लाने लगी|

सही इलाज न होने से उसका दाहिना पैर पूरी तरह से खराब हो गया| इस घटना के बाद सोड़ी का जीवन पूरी तरह से बदल गया| ये 3 साल की बच्ची एकदम चुप सी हो गई| इस दर्दनाक घटना ने उसकी मुस्कुराहट ही छिन ली| बहुत जल्द वह अपने एक ही पैर से चलना सीख गयी|

सोड़ी जैसे ही 6 साल की हुई उसके पिता ने गाँव के सरकारी स्कूल शासकीय प्राथमिक शाला केशापारा गुफड़ी में उसका नाम दर्ज करवाया, जब सोड़ी के बारे में सुकमा जिले में समावेशी शिक्षा के तहत् संचालित आकार आवासीय संस्था को हुई, तो उन्होंने सोड़ी के पिता से बात करके उसका दाखिला यहाँ करवाया|

सोड़ी ने अपने जीवन का दूसरा सपना आकार आवासीय संस्था में दाखिले के बाद देखना शुरू किया| सोड़ी ने बहुत ही कम समय में इस संस्था में रहकर बहुत कुछ सीख लिया और उसके अंदर एक नई ऊर्जा का संचार हुआ, जिसकी वजह से वह अपनी सबसे बड़ी कमी को अपनी ताकत बनाया और वह एक सामान्य बच्चे की तरह एक पैर से ही सब कुछ करने लगी|

सोड़ी का नृत्य विधा में विशेष रूचि है, जिसे देखते हुए आकार आवासीय संस्था ने उसे नृत्य करने हेतु प्रेरित किया| कुछ ही दिनों में वह नृत्य विधा में भी पारंगत हो गई और आज सामान्य बच्चों के साथ भी नृत्य करती है| सोड़ी अपने साथ के एक मूकबधिर छात्र से प्रेरित होकर नृत्य करना शुरू की थी और आज उसकी पहचान एक कुशल नृत्यांगना के रूप में हो गई है|

पिछले वर्ष सोड़ी ने जिला प्रशासन सुकमा द्वारा आयोजित स्वतंत्रता दिवस समारोह में भी नृत्य विधा में भाग लिया और काफी उम्दा प्रदर्शन किया| इस कार्यक्रम में जिले के बड़े - बड़े अधिकारियों समेत पूरा शहर उपस्थित था| सोड़ी को एक पैर से इतना अच्छा प्रदर्शन करता देख तालियों की जो गड़गड़ाहट हुई, उससे पूरा शहर गुंज उठा और सभी ने उसके हौसले और हिम्मत की जमकर प्रशंसा की| सोड़ी ने अपने हिम्मत और हौसले से यह साबित कर दिया कि हमें किसी भी स्थिति में हार नहीं मानना चाहिए|

"डर मुझे भी लगा फासला देखकर, पर मैं बढ़ता गया रास्ता देखकर|
खुद-ब-खुद मेरे नजदीक आती गई, मेरी मंजिल मेरा हौसला देखकर||"

बालोद

सफलता की कहानी

बच्चों के सर्वांगीण विकास हेतु समर्पित है श्रीमती शिल्पी राय

नाम :- श्रीमती शिल्पी राय
पदनाम :- सहायक शिक्षक (विज्ञान)
संस्था :- शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय साल्हे, विकासखण्ड डौंडी, जिला बालोद, छत्तीसगढ़

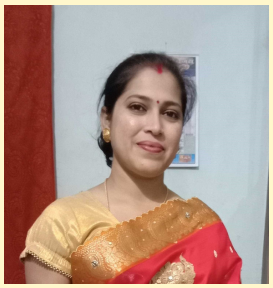

ब्लॉग लेखक :- श्रवण कुमार यादव, सहायक शिक्षक, शासकीय प्राथमिक शाला कोसा, संकुल केंद्र गोरकापार, विकासखण्ड गुण्डरदेही, जिला बालोद, छत्तीसगढ़

आज कोविड-19 की वजह से सभी शैक्षणिक संस्था बंद होने की वजह से बच्चों की पढ़ाई प्रभावित न हो, इसके लिए छत्तीसगढ़ सरकार के स्कूल शिक्षा विभाग विभिन्न विकल्पों को क्रियान्वित कर रही है। इन्हीं विकल्पों को आधार बनाकर प्रदेश भर के स्वप्रेरित शिक्षकों द्वारा बच्चों को शिक्षा की मुख्यधारा से जोड़कर सीखने-सिखाने हेतु नि:स्वार्थ सेवा भाव से सहभागिता दे रहे है।

शिक्षा वारियर की भूमिका में श्रीमती शिल्पी राय आज हमारे नायक के रूप में हम एक ऐसे ही सेवाभावी शिक्षक की चर्चा करेंगे जिन्होंने बच्चों को ऑनलाइन, ऑफ़लाइन पढ़ाई, मिस्डकॉल गुरूजी, सहित यूट्यूब चैनल जैसे विभिन्न नवाचार करते हुए शिक्षा वारियर की भूमिका निभा रही है। जी हाँ, हम बात कर रहे हैं श्रीमती शिल्पी राय की, जो सहायक शिक्षक (विज्ञान) के पद पर शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय साल्हे, विकासखण्ड डौंडी, जिला बालोद में पदस्थ है।

ऑनलाइन कक्षा में जुड़ते है अन्य स्कूलों के बच्चे पढ़ई तुंहर दुआर अंतर्गत cgschool.in पोर्टल के ब्लॉग लेखक श्रवण कुमार यादव से चर्चा करते हुए शिक्षा वारियर श्रीमती शिल्पी राय ने जानकारी दिया कि मेरे द्वारा लॉक डाउन के शुरूआत से ही ऑनलाइन कक्षा संचालित किया जा रहा है।

शिल्पी राय ने आगे बताया कि जिन बच्चों के घर ऑनलाइन पढ़ाई हेतु सुविधा नहीं होने से ऑनलाइन पढ़ाई से वंचित हो रहे थे। ऐसे बच्चों के लिए मेरे द्वारा गांव के सार्वजनिक स्थल पर मोहल्ला तुंहर पारा अंतर्गत ऑफ़लाइन पढ़ाई भी संचालित किया जा रहा है। इस ऑफ़लाइन कक्षा में भी आसपास के स्कूलों में पढ़ने वाले बच्चे भी आ कर अपनी सहभागिता देते हैं।

"मिस्डकॉल गुरूजी" नवाचार का क्रियान्वयन सूरजपुर जिले के नवाचारी शिक्षक गौतम शर्मा की परिकल्पना एवं पढ़ई तुंहर दुआर कार्यक्रम अंतर्गत महत्वपूर्ण नवाचार "मिस्डकॉल गुरूजी" को अपना कर शिल्पी राय द्वारा बच्चों को सीखा रही है। उनके द्वारा ऑनलाइन एवं ऑफ़लाइन पढ़ाई कराने के दौरान बच्चों को अगर कोई अवधारणा समझ नहीं पाते हैं, तो ऐसे बच्चे निर्धारित समय अनुसार उनको मिस्डकॉल देते हैं, फिर उनके द्वारा कॉल बैक कर सम्बंधित बच्चे की शंका समाधान करने का प्रयास किया जाता है।

बच्चों की सुविधा हेतु "SHILPY RAY CLASSES" नामक यूट्यूब चैनल का निर्माण श्रीमती शिल्पी राय द्वारा बच्चों को कोर्स मटेरियल, शैक्षणिक गतिविधियों, ऑनलाइन कक्षा की रिकॉर्डिंग, असाइनमेंट आसानी से उपलब्ध हो सके, साथ ही इस चैनल के माध्यम से विद्यार्थियों को असाइनमेंट को समझ कर सॉल्व करने में भी मदद मिल रही है। मैंने cgschool.in पोर्टल में भी अनेकों वीडियो बनाकर अपलोड किया है। इस प्रकार आज के हमारे नायक शिल्पी राय के द्वारा उपरोक्त स्वप्रेरित भाव से किए जा रहे नवाचार से हमें एक सकारात्मक प्रेरणा मिल रही है।

बलौदाबाजार सफलता की कहानी

ऑनलाइन कक्षा में सर्वाधिक विद्यार्थी उपस्थिति के नंबर 1 बने दिलीप कुमार बांधे

श्री दिलीप कुमार बांधे, व्याख्याता (रसायन),
शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय गुमा,
विकासखण्ड पलारी, बलौदाबाजार (छ.ग.),

ब्लाग लेखक :- श्रीमती सीमा मिश्रा ,
शिक्षक,शासकीय पूर्व माध्यमिक शाला खम्हरिया,
वि.ख.भाटापारा , जिला बलौदा बाजार, भाटापारा

नायक के रूप में एक ऐसे शिक्षक को सभी के सामने प्रस्तुत कर रहे हैं जिनकी उपलब्धियां स्वयं में अद्भुत है। जून 2020 से जिला स्तरीय ऑनलाइन कक्षाओं का संचालन करने वाले श्री दिलीप कुमार बांधे आज राज्यभर में अपनी ऑनलाइन कक्षा में सर्वाधिक बच्चों से जुड़ने वाले शिक्षक बन चुके हैं | जो कुछ भी सीखा सके वो शिक्षक है, गुरु है वह चाहे किसी भी विधि से सिखाएं.....आप 100 साल के बुजुर्ग से कुछ सीखे तो वो शिक्षक, 2 माह के बच्चे से सीखो तो वो शिक्षक। एक चींटी से कुछ सीखो तो वो शिक्षक, एक हाथी से सीखो तो वो शिक्षक। सब तरफ शिक्षक ही शिक्षक है, बस कोई शिक्षा ग्रहण करने को तैयार होना चाहिए।

ऑनलाइन शिक्षा - हम आज भी अपने बच्चों को स्कूल की क्लास रूम में बैठाकर ही शिक्षा ग्रहण कराने में ज्यादा विश्वास करते हैं लेकिन विगत कुछ वर्षों से हमारे देश में ऑनलाइन शिक्षा (Online Education) भी काफी लोकप्रिय हुई है। कोरोना के बढ़ते खतरे के कारण पूरे देश में हुए लॉकडाउन की वजह से जब सारे शिक्षण संस्थाएं बंद हो गई। तब बच्चों को अपनी शिक्षा जारी रखने के लिए ऑनलाइन शिक्षा का मजबूत सहारा मिला | लगभग सभी स्कूलों के द्वारा इंटरनेट के माध्यम से बच्चों को ऑनलाइन शिक्षा दी जा रही है ताकि बच्चों की पढ़ाई का नुकसान ना हो और आज देश के अधिकतर विद्यार्थी ऑनलाइन शिक्षा से जुड़कर काफी खुश भी हैं | इस माध्यम से शिक्षक अपने घर बैठ कर या दुनिया के किसी भी कोने में बैठ कर अपने विद्यार्थियों को बेहतरीन शिक्षा प्रदान कर सकता है। अच्छी शिक्षा हासिल करके ही अच्छे एवं सुरक्षित भविष्य की नींव डाली जा सकती है।

आज छत्तीसगढ़ राज्य में आज छत्तीसगढ़ राज्य ऑनलाइन वर्चुअल क्लास में सर्वाधिक बच्चों से जुड़ने वाले शिक्षक के रूप में सबसे उच्चतम शिखर को प्राप्त करने वाले शिक्षक हैं। जिनकी कक्षाओं में आज तक 4 लाख से अधिक बच्चे जुड़ चुके हैं ,इनके द्वारा अभी तक लगभग 3700 ऑनलाइन कक्षा का संचालन किया गया है,,,औसतन 2500 बच्चे प्रतिदिन इनसे ऑनलाइन अध्यापन करते हैं। श्री बांधे रसायन तथा विज्ञान विषय की कक्षा संचालित करते हैं।

बच्चों की बढ़ती हुई संख्या को ध्यान में रखते हुए एक साथ 5 से अधिक मोबाइल का उपयोग कक्षा संचालन हेतु करते हैं। ताकि अधिक से अधिक बच्चों को इसका लाभ मिल सके। अपने छत्तीसगढ़ के साथ बाहरी राज्य के विद्यार्थी भी इनकी कक्षा में शामिल होते हैं। साथ ही आवश्यकतानुसार विद्यार्थी फोन से अपनी समस्याओं का समाधान भी शिक्षक से प्राप्त करते हैं। एक बार आप सब भी कभी एकांत में बैठ कर सोचिये यदि आपके जीवन से शिक्षक को हटा दिया जाए तो क्या शेष रहेगा? शायद कुछ नहीं, शिक्षक का महत्त्व शब्दों में नहीं बताया जा सकता, इसे महसूस किया जाता है।

बलौदा बाजार के बहुत से शिक्षक ऑनलाइन कक्षाओं का संचालन करने तथा बच्चों के शामिल होने में अभी तक राज्य भर में सबसे आगे चल रहे हैं। इस प्रकार की उपलब्धियाँ प्रदेशव्यापी स्तर पर जिले का सम्मान बढ़ाती है।

कोरबा

सफलता की कहानी

खिलौने के माध्यम से बच्चों को अध्यापन कराने वाली शिक्षिका

नाम - श्रीमती सीमा पटेल,
पद -शिक्षक (LB),
विद्यालय – शा. मा. शा.
स्याहीमुड़ी, एजुकेशन हब (अंग्रेजी माध्यम) विकासखण्ड - कटघोरा,
जिला – कोरबा (छत्तीसगढ़)

ब्लॉग लेखक :- चरण दास महंत, जिला - बिलासपुर

खिलौने के माध्यम से अध्यापन कराकर बच्चों का भविष्य गढ़ रही हैं सीमा पटेल | एक मिडिल स्कूल शिक्षिका है, जिन्होंने हमेशा अपने कार्य मे नवाचार को महत्व दिया है| उनमें से एक सिखाने का जो उपकरण उपयोग करती हैं, वो है खिलौने | छोटे बच्चों को जो सबसे ज्यादा अपनी ओर आकर्षित करने वाली वस्तु खिलौने ही होते हैं और अगर खिलौने को शिक्षा से जोड़ दिया जाये तो प्रत्येक विषय को खेल - खेल में ही सीखाया जा सकता है। इनके खिलौने विभिन्न विषय जैसे विज्ञान, गणित, अंग्रेजी जैसे कठिन लगने वाले विषयों को बच्चों को सरल रूप में व खेल-खेल में सीखने में सहायक है। सीमा जी द्वारा निर्मित खिलौनों की कुछ खास विशेषताएं भी हैं :--

1. ये खिलौने ज्यादातर कबाड़ या अपशिष्ट समझे जाने वाली वस्तुओं से बनाती हैं।
2. प्रत्येक खिलौना शून्य निवेश से बनाने की कोशिश करती हैं।
3. मिडिल स्तर पर कठिन लगने वाले विषयों को सरलीकरण करने इनका उपयोग करती हैं।
4 .विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के द्वारा भी इन खिलौनों का उपयोग किया जा सके, ऐसे खिलौने भी यह बनाती हैं।
5. इनके खिलौने बेहद आकर्षक, विषय अनुरूप व मनोरंजक होते हैं, जिनके कारण बच्चे खुद खेल - खेल कर उनसे अपनी दक्षता प्राप्त कर लेते हैं |

इनके नवाचार, टी एल एम, खिलोनों से बच्चो में निम्न दक्षताओं का विकास मे सहायक होती हैं ::-

1. अभिव्यक्ति के कौशल विकास में, 2. खेल खेल से विषय आधारित दक्षता प्राप्त करने में, 3. मोटर स्किल्स के विकास में सहायक, 4. सोचने व समझने की क्षमता में विकास हेतु, 5. न्यूनतम अधिगम स्तर को प्राप्त करने में सहायक होते हैं, 6. खेल-खेल में बच्चे आसानी से कठिन टॉपिक को समझ जाते हैं, 7. स्थायी समझ का विकास होता है, 8. स्वयं करके देखने की क्षमता का भी विकास होता है, 9. साधारण व विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के मानसिक विकास में सहायक है, 10. बच्चों में वैज्ञानिक सोच को बढ़ावा देते हैं।

एक खिलौना की निर्माण विधि –

मिडिल स्तर के बच्चों को विज्ञान में जो टॉपिक सबसे कठिन लगता है, वह है मस्तिष्क व केंद्रीय तंत्रिका तंत्र व इसकी कार्य विधि। इसके लिए हेलमेट (पुराना) क्ले का उपयोग कर एक खिलौना बनाया, जिसे बच्चे पहन पहन कर मस्तिष्क को आसानी से समझते हैं। विशेष आवश्यकता वाले बच्चे भी इसे छूकर, देखकर, पहनकर इसे समझ जाते हैं। केंद्रीय तंत्रिका तंत्र के लिए पुरानी कैप में मस्तिष्क की पेंटिंग कर दी। फिर पीछे मोटे धागे के गुच्छे बनाकर इनमें फोम और रबर बैंड के छल्लों को गूथ दिया और कैप के पीछे बांध दिया। जिसे बच्चे खुद पहनकर व दूसरों को पहनाकर पूंछ बनाकर इसे आसानी से समझ जाते हैं।

यूट्यूब चैनल व पेज पर इन्हें अन्य शिक्षकों के साथ अपने टी एल एम को साझा कर उनको भी प्रेरित करती है। कोरोना काल में इनकी पढ़ाई पर परेशानी आता देखकर सीमा जी ने सभी छात्राओं के अभिभावक से बात कर उन्हें पढ़ाई से जोड़े रखने हेतु उन्हें मनाया और 91 बच्चों में से 86 बच्चों का रजिस्ट्रेशन cgschool.in करवाकर उनकी पढ़ाई ऑनलाइन जारी रखी।

कोरिया

सफलता की कहानी

बच्चों में खिलौना निर्माण की कला विकसित कर पढ़ाई को रुचिपूर्ण बनाने वाली नवाचारी शिक्षिका

नाम:- परवीन बानो
पद:- सहायक शिक्षक
शाला:- प्राथमिक शाला, आज़ाद नगर
संकुल:- कटकोना, विकासखंड:- बैकुंठपुर,
कोरिया (छत्तीसगढ़)

ब्लॉग राइटर:- गीता पी. नायर,
व्याख्याता, शा. उ. मा. विद्यालय, मर्रा

आज हम प्राथमिक शाला, आज़ाद नगर की ऐसी नवाचारी शिक्षिका परवीन बानो के बारे में बात कर रहे हैं, जिन्होंने इस कोरोना काल में बच्चों को ऑनलाइन/ऑफलाइन पढ़ाने के साथ-साथ उनमें खिलौना निर्माण की कला का विकास कर उनके अंदर छिपी प्रतिभा, रचनात्मकता व सृजनात्मकता को बाहर प्रदर्शित किया।

परवीन बानो ने बातचीत के दौरान राज्य स्तरीय ब्लॉग लेखिका गीता पी. नायर को बताया कि उन्होंने कभी नहीं सोचा था कि कोरोना महामारी की वजह से स्कूलों में बच्चों की शिक्षा बुरी तरह से प्रभावित होगी। उन्हें लगा कि शायद कुछ दिनों के लॉकडाउन के बाद स्कूल पुनः खुल जाएँगे, पर ऐसा हुआ नहीं। सभी शिक्षक, छात्र व पालक गण छात्रों की पढ़ाई के लिए चिंतित हो रहे थे।

इन्होंने ऑनलाइन व ऑफलाइन (मोहल्ला क्लास) दोनों के माध्यम से ही छात्रों को पढ़ाई से जोड़े रखा व नए नवाचारी कार्य जैसे मोहल्ला लीडर व खिलौना निर्माण द्वारा पढ़ाई को और रुचिकर बनाया। मोहल्ला लीडर योजना:- इन्होंने अलग-अलग मोहल्लों में मोहल्ला लीडर का चुनाव किया। मोहल्ला लीडर ऐसे छात्रों को बनाया गया जो बहुत ही सक्रिय व समझदार थे। इन लीडर्स की जिम्मेदारी थी कि घर के आसपास जाकर छात्रों को पढ़ाने में मदद करें और ऑनलाइन कक्षाओं से छात्रों को जोड़ने का प्रयास करें। साथ ही जिन छात्रों के घर में स्मार्ट फ़ोन नहीं था। उनके गृह-कार्य को वे मोबाइल से फोटो लेकर ग्रुप में भेज देते थे। इन सभी लीडर्स ने अपनी सम्पूर्ण सहभागिता देते हुए छात्रों की पढ़ाई को पूरा करने में उनकी मदद की।

खिलौना निर्माण:- प्राथमिक शाला, आज़ाद नगर के छात्रों द्वारा विभिन्न खिलौने निर्माण को आगे बढ़ाने का प्रयास किया, शिक्षिका परवीन बानो के इस कार्य में उनके प्रधान पाठक श्री सत्यपाल सिंह ने पूरा सहयोग प्रदान किया। छात्रों ने इनके मार्गदर्शन में मिट्टी, कागज़, आइस्क्रीम स्टीक, तार व गत्ते के द्वारा विभिन्न प्रकार की वस्तुओं का निर्माण किया। इनका मानना है कि खिलौना मनोरंजन की चीज़ है।

मिट्टी की उपयोगिता को समझाने के लिए मिट्टी के बर्तन व जानवरों को बनाना, गत्ते से बने खिलौनों से गिनती, आकृतियाँ व रंग की अवधारणा को समझाना, बाँस की लकड़ियों से तीर-धनुष, टोकरी का निर्माण, कागज़ द्वारा घर के साज-सज्जा, फूल-पत्तियों का निर्माण, इन सारी चीज़ों को बच्चे ना सिर्फ रुचिपूर्ण बनाकर सीखते हैं, बल्कि विषय वस्तु की अवधारणा को भी वह स्पष्ट व स्थाई रूप से समझ जाते हैं। खिलौने निर्माण द्वारा बच्चों में रचनात्मकता व सृजनात्मकता का विकास सच में अद्भुत है। हम शिक्षा विभाग का दिल से धन्यवाद करते हैं। जिनकी ये परिकल्पना है व साथ-साथ ऐसे मेहनती शिक्षकों के उज्ज्वल भविष्य की कामना करते हैं। जिनके मार्गदर्शन में बच्चे बहुत कुछ सीख जाते हैं।

मीडिया में
पढ़ई तुंहर दुआर ...

सम्मान
- लोक शिक्षण संचालक जितेन्द्र शुक्ला ने ग्रहण किया अवॉर्ड
- लखनऊ के ताज होटल में मुख्यमंत्री योगी आदित्य नाथ ने किया सम्मानित

पढ़ई तुंहर दुआर को मिला ई गवर्नेंस अवॉर्ड

बच्चों को सरल तरीके से अंग्रेजी सिखाने के दिए टिप्स
प्रमुख सचिव चॉक उठा बने टीचर, ली शिक्षकों की क्लास

ट्रेनिंग
- पीएलसी सदस्यों को डेढ़ घंटे खुद पढ़ाया
- रायपुर से आए थे अंग्रेजी पढ़ाने वाले शिक्षक
- प्रमुख सचिव बोले, अंग्रेजी परीक्षा का विषय नहीं लगना चाहिए

पीएलसी सदस्यों ने देखा अंग्रेजी स्कूल

सीएम बोले- आप प्राचार्यों पर है बेहतर शिक्षा और स्कूल प्रबंधन का जिम्मा

30 दिन के अंदर काम पूरा करने का निर्देश
3 शासकीय अंग्रेजी मीडियम स्कूल
सवा करोड़ से बनेंगे स्मार्ट क्लास

अंगना म शिक्षा के नाम से कार्यक्रम आयोजित
माताओं को बताए खेल-खेल में बच्चों को पढ़ाने के तरीके

छड़िया और अमेरा विद्यालय में मना अंगना म शिक्षा कार्यक्रम

अधिकारियों ने कहा माताएं ले छोटे बच्चों की जिम्मेदारी

असाक्षरों को पढ़ाएंगे स्वयं सेवी शिक्षक
अभियान- स्वयं सेवी शिक्षकों का ऑनलाइन उन्मुखीकरण

शिक्षकों के लिए पूर्णकालिक प्रशिक्षण

शिक्षकों ने पढ़ाया, सरकार को मिला ई-गवर्नेंस अवार्ड

बच्चों के भविष्य को संवारने में लगा हुआ शिक्षक-पीललाल पटेल

सीख कार्यक्रम से 79646 छात्र लाभांवित
यूनिसेफ व राज्य साक्षरता मिशन के कार्यक्रम में बच्चों को घर में दे रहे शिक्षा

मीडिया में पढ़ई तुंहर दुआर ...

नवभारत साक्षरता कार्यक्रम शुरू करेगी केन्द्र सरकार

शत-प्रतिशत साक्षरता के लिये सरकार की पहल

शिक्षा नीति के विभिन्न सुझावों को लागू किया जाएगा

एजेंसी। नई दिल्ली

सरकार 2030 तक शत-प्रतिशत साक्षरता के लक्ष्य को हासिल करने के लिए प्रौढ़ शिक्षा की नयी योजना 'नव भारत साक्षरता कार्यक्रम' शुरू करने जा रही है. इसमें नयी राष्ट्रीय ...

वरिष्ठ अधिकारियों ने यह जानकारी दी. केंद्रीय शिक्षा मंत्रालय के अधिकारियों ने बताया, 'प्रौढ़ शिक्षा संबंधी यह केंद्र प्रायोजित नयी योजना वर्ष 2021-26 के दौरान लागू की जाएगी.' उन्होंने कहा कि ...

पिछले महीने केंद्रीय स्कूली एवं साक्षरता सचिव की अ... हुई बैठक में 35 राज्यों/केंद्र प्रदेशों के ...

पढ़ना-लिखना अभियान • दो दिनी उन्मुखीकरण कार्यक्रम

असाक्षरों को डिजिटल तरीके से भी दी जाएगी शिक्षा

खास बातें

- प्रौढ़ों के सम्मान का ध्यान रखने निर्देश

नवभारत रिपोर्टर। रायपुर। www.navabharat.news

साक्षरता कक्षा में स्वयं सेवी शिक्षक परंपरागत पद्धति के अलावा डिजिटल तरीके से भी शिक्षा देंगे. साथ ही प्रौढ़ों के सम्मान का ध्यान रखने के निर्देश दिए गए हैं.

पावर प्रजेन्टेशन भी दिया

जिला साक्षरता मिशन प्राधिकरण के रिसोर्स पर्सन डुर्नीलाल शर्मा ने स्वयंसेवी शिक्षकों की भूमिका को स्पष्ट किया. सेंट्रल कॉलेज ऑफ एजुकेशन की प्राध्यापक बारा यादव ने कक्षा संचालन पर अपनी बात रखी. परियोजना सलाहकार निधि अग्रवाल ने कक्षा को रोचक व आकर्षक बनाने तथा वातावरण निर्माण पर पावर पाइंट प्रस्तुति दी. सुनील राय ने पंजीयन प्रक्रिया, परियोजना सलाहकार ... पोर्टल एवं यूट्यूब में शामिल की गई ...

डिजिटल माध्यम से पढ़ाई को रोचक बनाने पर विशेष सत्र लिया. डॉ. कौर ने कहा कि प्रौढ़ों के पास पहले से ही ज्ञान का भंडार है. हमें उनके ... व अनुभव को ...

शिक्षा में सुधार का रोडमैप तैयार

लोकवाणी की पंद्रहवीं कड़ी में आम जनता से हुए रू-ब-रू मुख्यमंत्री

लोकवाणी

- जनता की खुशहाली व राज्य के विकास को लेकर रखा सरकार का विजन
- सड़क, बिजली और सिंचाई संसाधनों के नेटवर्क को पूरा करने पर जोर
- स्थानीय संसाधनों में वेल्यू एडीशन से संबंधित पाठ्यक्रम

नवभारत न्यूज। रायपुर। www.navabharat.news

मुख्यमंत्री भूपेश बघेल ने रविवार को प्रसारित अपनी मासिक रेडियोवार्ता ...

बच्चों के संपूर्ण विकास के रोडमैप

मुख्यमंत्री ने कहा कि स्कूल शिक्षा में गुणवत्ता सुधार का एक रोडमैप बनाया गया है. इसके अनुसार विभिन्न शालाओं में बहुत से कार्य किए जा रहे हैं. इससे बच्चों के व्यक्तित्व का संपूर्ण विकास हो, जिससे वे आगे चलकर डॉक्टर, इंजीनियर ही नहीं बल्कि शोधकर्ता, खिलाड़ी, प्रबंधक या अपनी रुचि के अनुसार कोई भी करियर अपना सकें. गरीब और मध्यमवर्गीय बच्चे उन सुविधाओं से वंचित न हों, इसलिए सरकारी क्षेत्र में इंग्लिश मीडियम स्कूल खुले जा रहे हैं.

कांकेर, महासमुंद व कोरबा में नए मेडिकल कॉलेज

मुख्यमंत्री ने कहा कि दुर्ग जिले के चंदूलाल चन्द्राकर स्मृति चिकित्सा महाविद्यालय को हमने अधिग्रहित करने का फैसला लिया, ताकि सरकारी चिकित्सा शिक्षा अधोसंरचना को बढ़ाया जा सके. तीन जिलों कांकेर, महासमुंद व कोरबा में हम नए मेडिकल कॉलेज खोल रहे हैं.

30 हजार ... चिन्हांकित

शिक्षा | सरकार ने शुरू की अंग्रेजी को बढ़ावा देने की तैयारी, खुलेंगे 118 नए स्कूल

प्रदेश में पहली बार अंग्रेजी के लिए अलग सेल

नईदुनिया ब्रेकिंग

संदीप तिवारी • रायपुर

छत्तीसगढ़ में पहली बार अंग्रेजी में बच्चों की गुणवत्ता बढ़ाने के लिए एक अलग से सेल गठित किया जाएगा। सेल में शिक्षा विभाग से एक ज्वाइंट डायरेक्टर, दो डिप्टी डायरेक्टर और दो असिस्टेंट डायरेक्टरों की नियुक्ति होगी।

स्कूलों में मिलेगी ये सुविधाएं

प्रथम चरण में राज्य में जो अंग्रेजी माध्यम स्कूल शुरू किए गए हैं। इन अंग्रेजी माध्यम के स्कूलों में अध्ययन-अध्यापन की सुविधा का विशेष ध्यान रखा गया है। इन स्कूलों में अत्याधुनिक लाइब्रेरी एवं लैब, कंप्यूटर और साइंस लैब के साथ ही ऑनलाइन शिक्षा की भी पूरी सुविधा उपलब्ध है। छत्तीसगढ़ सरकार द्वारा इन स्कूलों को विकसित करने के लिए 130 करोड़ रुपये प्रदान किए गए हैं।

अंग्रेजी माध्यम स्कूल में बदलेंगे ये स्कूल

- शासकीय उच्चतर माध्यमिक स्कूल माना कैंप
- शासकीय उच्चतर माध्यमिक स्कूल कुरा
- शासकीय उच्चतर माध्यमिक स्कूल अभनपुर
- शासकीय उच्चतर माध्यमिक स्कूल आरंग
- नगर माता बिन्नी बाई सोनकर उमावि रायपुर

पढ़ई तुंहर दुआर योजना में शिक्षकों ने पढ़ाया, सरकार को मिला अवार्ड : फेडरेशन

... 2021 | वर्ष - 62 | अंक - 308 | पृष्ठ - 12 | मूल्य - 3.00 रु. प्रेस पंजीयन - 6072/59 डाक पंजीयन ...

रायपुर, 22 फरवरी (देशबन्धु)। कोरोना संक्रमण काल में भले ही स्कूल बंद रहे लेकिन शिक्षकों ने विभिन्न तरीकों से पढ़ाना जारी रखा था जिसके कारण राज्य शासन को ई-गवर्नेंस अवार्ड मिला है। ई-गवर्नेंस अवार्ड का मिलना ही शिक्षकों के लगन और सेवाभाव का प्रमाण है। उक्त आशय को छत्तीसगढ़ प्रदेश शिक्षक फेडरेशन के प्रांताध्यक्ष राजेश चटर्जी ने वार्षिक आमसभा में ...

लेने का तरीकों पर में विशेषज्ञ कुबेर राम देशमुख ने विस्तृत पक्ष रखा। आमसभा को प्रमुख रूप से राजेन्द्र सिंह, अरुण प्रबे, सतीश ब्यौहार, कमलेश सोनी, एम एस आज़ाद, राधेश्याम साहू ने सहायक शिक्षकों को तृतीय समयमान/क्रमोन्नत वेतनमान ... पदोन्नति ...

असाक्षरों को पढ़ाएंगे स्वयं सेवी शिक्षक

अभियान- स्वयं सेवी शिक्षकों का ऑनलाइन उन्मुखीकरण

नवभारत रिपोर्टर। रायपुर। www.navabharat.news

शिक्षकों के लिए पूर्णकालिक प्रशिक्षण

दो दिवसीय उन्मुखीकरण के तहत बुधवार को साक्षरता में डिजिटल माध्यमों का उपयोग, नवाचारी गतिविधियां, पठन-पाठन की गतिविधियां, पढ़ने-लिखने की गतिविधियां, गणित कौशल, वातावरण निर्माण की जानकारी विषय विशेषज्ञों द्वारा दी जाएगी। ... प्रदेश स्तर पर स्वयंसेवी शिक्षकों के लिए ... किया जाएगा।

खेल और खिलौनों से पढ़ाई को बनाया आसान

गणित और शब्द ज्ञान के लिए बच्चों के बीच नई तकनीक

■ बचेली की जरीना खातून का शिक्षा में नया प्रयोग

दंतेवाड़ा, 10 फरवरी (हाईवे चैनल)। विकासखंड बचेली की प्राथमिक शाला लेबरहाटमेंट की एक ऐसी शिक्षिका हैं, जो बच्चों के लिए खिलौना निर्माण कर शिक्षा प्रदान कर रही हैं। उनका मानना हैं, कि बच्चों को उनकी रूचि अनुरूप शिक्षा मुहैया कराने पर वे बहुत ही जल्दी सीख पाते हैं और उनका लगाव पढ़ाई में बना रहता हैं। शिक्षिका का नाम है श्रीमती जरीना खातून। शिक्षा में इस तरह के प्रयोग को कलेक्टर दीपक सोनी, सीईओ जिला पंचायत अश्वनी देवांगन हमेशा प्रोत्साहित करते रहे हैं। इनके मार्गदर्शन में जिला शिक्षा अधिकारी राजेश कर्मा और डीएमसी एसएल सोरी भी शिक्षकों को प्रेरित कर रहे हैं। जरीना, पढ़ई तुंहर दुआर के माध्यम से हर बच्चे को शिक्षा मिले, इस हेतु मोहल्ला क्लास में जाकर नियमित रूप से बच्चों को विभिन्न प्रकार की गतिविधियाँ और खिलौने से अध्यापन कराती हैं। इस क्लास में वे बच्चों को विभिन्न प्रकार के टी.एल.एम. का उपयोग कर बच्चों को शिक्षा देने का प्रयास कर रही हैं। वे बताती हैं, टी.एल.एम.और खिलौने के उपयोग से बच्चे खेल- खेल में सरलता पूर्वक सीखने के लिए तत्पर होने लगते हैं। इस कारण अनेक प्रकार के ऐसे टी.एल.एम. और खिलौने बनाने का प्रयास किया, जो खेल -खेल में ही बच्चों को शिक्षा देने के लिए हो। उदाहरण के रूप में शब्द अक्षर, चकरी खेल, मात्रा डिस्पोजल कप , बारहखडी, शब्द बुक, फ्लैश कार्ड , पेपर प्लेट से मुखौटा, इंग्लिश वर्ड्स बॉक्स, पेपर प्लेट से घड़ी , थर्माकोल डिस्पोजल ग्लास से स्थानीय मान का खेल, संख्या मीटर गेम, जोड़ घटाव बॉक्स खेल, जोड़ घटाव बोर्ड गेम, डिवीजन गेम, भिन्न अवधारणा बोर्ड आदि। इसके साथ ही यूट्यूब से विभिन्न प्रकार के वीडियो को डाउनलोड करके बच्चों को दिखाकर कविता, कहानी और विषय से संबंधित अवधारणाओं को समझाने का भी प्रयास उनके द्वारा किया जा रहा है। इनके द्वारा कुछ प्रमुख खेल की निर्माण विधि जोड़ घटाव क... बोर्ड गेम के लाभ-इसके माध्य... से बच्चा सरल तरीके से बार ब... गिनना, जोड़ना और घटा... सीखता है। साथ ही कम ज्य... को स्पष्ट तरीके से समझने ल... हैं। अंकों के साथ साथ संख्या... भी अवधारणा को समझने ल... है साथ पढ़ना-लिखना भी सी... हैं। स्वयं सीखने की ... विकसित होती है।

उन्मुखीकरण कार्यक्रम

खेल-खेल में बच्चों को दी जा रही शिक्षा

पत्रिका न्यूज़ नेटवर्क
patrika.com

कुरुद. कार्यक्रम में बच्चों को पढ़ाते हुए उनके पालक।

कुरुद. शासकीय प्राथमिक शाला कातलबोड़ संकुल केंद्र चर्रा में माताओं का उन्नमुखीकरण के तहत अंगना म शिक्षा कार्यक्रम हुआ। एमटी आरती पटेल ने बताया कि कुरुद ब्लाक में इस कार्यक्रम के क्रियान्वयन के लिए तीन शालाओ का चयन किया गया है, जिसमें से एक प्राथमिक शाला कातलबोड़ है। इस कार्यक्रम के तहत पूर्व प्राथमिक शाला में अध्ययनरत बच्चो को उनके माताओं के माध्यम से मूलभूत जानकारी प्रदान करना है। साथ ही खेल-खेल में घर में उपलब्ध सामग्री के माध्यम से बच्चो को शिक्षा देना है, जिससे की बच्चे प्राथमिक शालाओ में आसानी से सीख सके। यह एक तरह का स्कूल रेडिनेस कार्यक्रम है। संकुल शैक्षिक समन्वयक विशेन्द्र तिवारी ने कहा कि किसी भी बच्चे के लिए प्रथम गुरू उनकी मां होती है। जो ज्ञान और शिक्षा एक मां अपने बच्चे को दे सकती है वह और कोई नहीं दे सकता। सरपंच सुनीता साहू महिलाओं से इस कार्यक्रम में बढ़-चढ़कर हिस्सा लेने के लिए कहा। मौके पर प्रभारी प्रधानपाठक दीपक जांगड़े पूर्णिमा पटेल, आंगनबाड़ी कार्यकर्ता मीना साहू, धेवती साहू, डिलेश्वर साहू, हेमन्त कौशल, दीपक जांगड़े, कुम्भकरण साहू, अमित सारंग, गोविन्द गायकवाड़, आरती पटेल समेत पालक मौजूद रहे।

PTD CG के विशेष आयोजन

नीचे दिए फोटो को टैप करके आयोजन का विडियो देखें

फोटो गैलरी

फोटो गैलरी

'OUR HEROES' do magic in Covid times

'Hamare Nayak' inspires school teachers, students in enhancing educational reach through innovative methods, reports **Ejaz Kaiser**

ve CHHATTISGARH

LIVING through the Covid pandemic, government school teachers and volunteers in Chhattisgarh have found innovative ways to communicate with their students in their attempt to engage children's attention.

A primary school teacher, Nilu Mahikwar, in Durg district brings newspaper clippings daily to share interesting stories with students so that they are better listeners, speakers and can draw inferences. Snehlata Toppo makes a novel use of mute cartoon films in various forms on her laptop and encourages her pupils to express themselves. Similarly, Devendra Dewangan in Narayanpur district encourages students to speak on a mike to do away with their fright.

Students, fascinated by such unconventional ways of some of the teachers, identify them with interesting nicknames — Motor Cycle guruji (Rudra Pratap Rana), cinema wale babu (for Ashok Lodhi) and for motorcycle wali behenji (Deeplata Deshmukh). No offence made. These teachers covered nearby villages and blocks carrying out professional roles. Such teachers are recognised as 'Hamare Nayak (our hero)' in the form of written blogs that narrate their teaching moments, and are posted on the official website of Chhattisgarh school education department daily. It allows teachers and students to realize each other's strength that leads to newer ways of effective academic communication.

"Besides routine courses, there are many instances during the pandemic where the teachers either on their own or within their community assisted each other to broaden their scope of involvement with the learning process of students through more meaningful ways," says M Sudhish, assistant director (Samagra Shiksha).

These teachers make use of mute cartoon films in various forms on her laptop and encourages their pupils to express themselves | EXPRESS

> We are promoting Augmented Reality (AR) classrooms and identifying teachers using the technology and the AR virtual classes
> M Sudhish, assistant director (Samagra Shiksha)

The objective behind the envisioned concept 'Hamare Nayak' is to identify novel teaching practices and to share them publicly with others on the official website. It's more like a carrot in the "carrot and stick management techniques", where a motivational approach involves offering a carrot (as reward for good actions) but without a stick (negative consequence).

SUCCESS STORY

Teachers Usha Kori and Satyendra Srivas who use puppets as part of their education curricula acknowledge that the idea has motivated them and other staff. It also led to change in their functioning and performance to achieve more acceptable output.

There is no fixed criterion for getting nominated on 'Hamare Nayak' as it keeps changing depending on the priority over a period of time and the direction where the school education department is keen to move ahead. For instance, when it was initially launched, the parameters on teachers' selection as the 'star' were securing maximum online classes, creative ways to connect or the highest number of online classes attended by students.

The focus later shifted to most number of assignments followed by the maximum number of offline classes taken by local teachers with most attendance of pupils.

"We are promoting Augmented Reality (AR) classrooms and identifying teachers using the technology and the AR virtual classes. The next criteria would be maximum assessment accomplished and the highest scores secured by students", said Sudhish.

Teachers from any level and the officials who worked towards scaling up the programme including the volunteer teachers and college students (willing to contribute as educator's role) also fit into such ongoing exercise under 'Hamare Nayak'.

Bharat Lal Baiga, a tribal student pursuing software engineering from Delhi University, stayed back in his village owing to the pandemic and formed a group of educated youths and started teaching the students.

As the concept began drawing attention and the 'Nayak' stories gained wider appreciation, the department was delighted to witness a boom in attendance with more local community teachers and students showing up in their classes. Village sarpanches in tribal-dominated Bastar and elsewhere have come out in support of the 'loudspeaker schools', said senior education officer Vijay Sharma.

All these stories have been uploaded from different parts of the state both in English and Hindi. The two best practices on any given day were selected for the official web portal to motivate the teaching faculty and enhance the educational outcome.

"The Hamare Nayak idea has led to fascinating stories on our portal. Students in remote areas were seen more into online classes, clearing doubts and completing their assignments", says Alok Shukla, principal secretary, school education.

Over 80% of the students are getting education via attending the Mohalla and online classes. Mohalla classes were recognized by PM Modi in his 'Mann Ki Baat' and also by Niti Aayog.

हमारे नायक में छत्तीसगढ़ की प्रमुख 5 क्षेत्रीय बोली

छत्तीसगढ़ी, हल्बी, गोंडी, सरगुजिया और कुड़ूख में अनुवाद सहित ब्लॉग प्रकाशित

कोरोना वायरस के कारण हुए लॉकडाउन की वजह से स्कूल - कॉलेज समेत तमाम शैक्षणिक संस्थान अपने - अपने शैक्षिक सत्र पूरा कर पाते, इससे पहले ही कोरोना संकट के चलते उन्हें 13 मार्च 2020 से बंद कर दिया गया । शिक्षक और अभिभावक बच्चों की पढ़ाई को लेकर काफी चिंतित थे | तभी प्रदेश के मुख्यमंत्री श्री भूपेश बघेल जी के निर्देश पर स्कूल शिक्षा विभाग के प्रमुख सचिव डॉ.आलोक शुक्ला जी अपनी पूरी टीम के साथ बच्चों की पढ़ाई घर पर ही सुरक्षित रहते हुए कराने की वैकल्पिक व्यवस्था बनाने की योजना में भीड़ गये और उन्होंने बहुत ही अल्प समय में बच्चों की पढ़ाई जारी रखने के लिए ऑनलाईन शिक्षा पोर्टल "पढ़ई तुंहर दुआर" तैयार किया, जिसका उद्घाटन मुख्यमंत्री महोदय के करकमलों से 7 अप्रैल 2020 को कराया गया। बहुत ही कम समय में इस कार्यक्रम के माध्यम से बच्चों की पढ़ाई ने अपनी गति पकड़ ली ।प्रदेश के सभी जिलों से एक शिक्षक और एक बच्चे का चयन नायक के रूप में करने का प्रक्रिया प्रारंभ की गई। मई माह से प्रारम्भ हमारे नायक कॉलम में ब्लॉक लेखन का कार्य आज आठवां चरण सफलतापूर्वक पूर्ण कर चुका है । अब तक अलग - अलग थीम पर कार्य करने वाले शिक्षकों और विद्यार्थियों को नायक बनने का अवसर प्राप्त हो चुका है।

समय-समय पर नए - नए कार्यों का समावेश करना तथा उन्हें प्रत्येक शिक्षक एवं विद्यार्थियों तक पहुंचाने की जिम्मेदारी राज्य समग्र शिक्षा के सहायक संचालक डॉ. एम. सुधीश ने बखूबी निभाई । अब तक प्रदेश के लगभग 450 शिक्षक और विद्यार्थियों का चयन हमारे नायक के रूप में हो चुका हैं। अब तक हमारे नायक कॉलम में हिन्दी, अंग्रेजी, संस्कृत सहित छत्तीसगढ़ी, गोंडी और सरगुजिया भाषा में ब्लॉग लेखन किया जा चुका है। इस विशेष ब्लॉग में विभिन्न क्षेत्रीय बोलियों को प्रदर्शित करने के लिए अलग - अलग रंगों में ब्लॉग अपलोड किया जायेगा। शिक्षक और विद्यार्थी दोनों का ब्लॉग लेखन हमारे नायक कॉलम के ब्लॉग लेखक और टीम नेतृत्वकर्ता सूरजपुर जिले के शिक्षक गौतम शर्मा ने किया है तथा छत्तीसगढ़ी में अनुवाद रायपुर जिले के ब्लॉग लेखक लोकेश कुमार वर्मा और बलौदाबाजार जिले की ब्लॉग लेखक श्रीमती सीमा मिश्रा ने, हल्बी में अनुवाद बस्तर जिले के शिक्षक महेन्द्र सिंह ठाकुर ने, गोंडी में अनुवाद राजनांदगाँव जिले के शिक्षक सदाराम धुर्वे ने, सरगुजिया में अनुवाद सूरजपुर जिले के ब्लॉग लेखक धर्मानंद गोजे ने तथा कुड़ूख में अनुवाद जशपुर जिले के शिक्षक रामेश्वर प्रसाद भगत ने किया है।

हमारे ब्लॉग राईटर्स

हमारे नायक

LALITA MATSYAPAL

Nikhil Kumar Tiwari

Jarina Khatun

Kajal Chakravarty

Trinath Rana

Bhuneshwari Sahu

SHAHID JAMALE ROOMEE

NEHRU LAL KUMBHAKAR

Mahesh Kashyap

Anita Nath

Sarita Agrawal

Neelam Shori

MEERA RAJAK

Nand Kumar Singh

Vandana Diwan

Yugal Kishor Dewangan

Dageshwar Prasad Sahu

Rajmoti Rathiya

Husamuddin Ahmed

Pramod Pandey

Bhagirathi Chandrakar

Pancham Singh Rohani

Baleshwar Nishad

Firoj Khan

RAJMAL JAIN

RAKESH KUMAR BAIS

Kumaresh Goutam

Satyendra Prakash Chauhan

संपादक मंडल

*** डॉ. योगेश शिवहरे * ए. के. सोमशेखर * प्रशांत पाण्डेय * डॉ. एम. सुधीश**
*** डॉ. विद्यावती चंद्राकर * सत्यराज अय्यर * डॉ. जयभारती चंद्राकर**

नीचे दिए बटन को टैप करके हमसे जुड़ें

/PTDchhattisgarh

t.me/ptdnews

पढई तुंहर दुआर

scert.del@gmail.com